PRINTMAN ASSOCIATES (P) LTD.
AN ISO 9001:2015 CERTIFIED CO.

REGULAR CRYSTAL SHEET WALL CALENDAR

SIZE:28"X40"

Collection : 2027

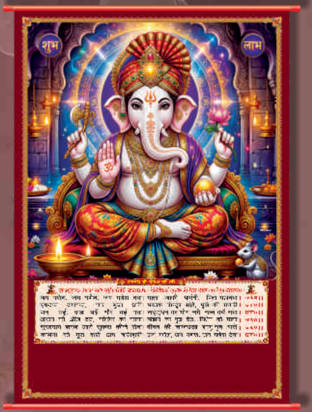

Introducing Printman's Regular Crystal Sheet wall calendar, setting a new standard for elegance and sophistication. Crafted from a metalized crystal sheet, this product exudes luxury. With advanced 5-color UV offset printing and metallic effects, we ensure stunning and vibrant prints. Each sheet is meticulously packed with Red plastic rods and individual boxes for protection. Elevate your prints with Printman's Regular quality crystal sheet.

आरती श्री गणेश जी की

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः। निर्विघ्नं कुरू मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ।।जय०।।
एकदन्त दयावन्त, चार भुजा धारी। मस्तक सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी ।।जय०।।
पान चढ़ें, फूल चढ़ें और चढ़ें मेवा। लड्डुअन का भोग लगे, सन्त करें सेवा ।।जय०।।
अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया। बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ।।जय०।।
सूरश्याम शरण आये सुफल कीजे सेवा। दीनन की लाजराखो शम्भु-सुत वारी ।।जय०।।
कामना को पूरा करो जग बलिहारी। जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा ।।जय०।।

1102

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

श्री लक्ष्मी वन्दना

महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि ।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ।।
नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।
नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयंकरि ।
सर्व पापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्ट भयंकरि ।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भक्तिमुक्तिप्रदायिनि ।
मन्त्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।

आरती श्री लक्ष्मी जी की

ओउम् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता। तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु धाता ।।ओउम्।।
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता। सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ।।ओउम्।।
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पत्ति-दाता। जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता ।।ओउम्।।
तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभ दाता। कर्म-प्रभाव प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता ।।ओउम्।।
जिस घर में तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता। सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता ।।ओउम्।।
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता। खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता ।।ओउम्।।
शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता। रतन चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता ।।ओउम्।।
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता। उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ।।ओउम्।।
जहाँ तक चरण तेरे पहुँचे, घर शुभ हो जाता। मैं सेवक मैया की शुभ दृष्टि चाहता ।।ओउम्।।

1104

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

श्री लक्ष्मी वन्दना

महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि ।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ।।
नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।
नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयंकरि ।
सर्व पापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्ट भयंकरि ।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भक्तिमुक्तिप्रदायिनि ।
मन्त्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।

आरती श्री लक्ष्मी जी की

ओ३म् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता। तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु धाता ।। ओ३म् ।।
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता। सूर्य-चन्दमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ।। ओ३म् ।।
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पत्ति-दाता। जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता ।। ओ३म् ।।
तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभ दाता। कर्म-प्रभाव प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता ।। ओ३म् ।।
जिस घर में तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता। सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता ।। ओ३म् ।।
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता। खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता ।। ओ३म् ।।
शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता। रतन चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता ।। ओ३म् ।।
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता। उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ।। ओ३म् ।।
जहाँ तक चरण तेरे पहुँचे, घर शुभ हो जाता। मैं सेवक मैया की शुभ दृष्टि चाहता ।। ओ३म् ।।

1105

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

1107

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

आरती श्री अम्बा जी की

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी । तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी ।। जय अम्बे ।।
मांग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को । उज्जवल से दोउ नैना, चन्द्र वदन नीको ।। जय अम्बे ।।
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे । रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे ।। जय अम्बे ।।
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी । सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुख हारी ।। जय अम्बे ।।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती । कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योति ।। जय अम्बे ।।
शुम्भ-निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती । धूम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती ।। जय अम्बे ।।
चण्ड - मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे । मधु कैटभ दोउ मारे, सुर-भयहीन करे ।। जय अम्बे ।।
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी । आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी ।। जय अम्बे ।।
चौसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरों । बाजत ताल मृदंगा, और बाजत डमरु ।। जय अम्बे ।।
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता । भक्तन की दुख हरता, सुख-सम्पति करता ।। जय अम्बे ।।
भुजा चार अति शोभित, वर - मुद्रा धारी । मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी ।। जय अम्बे ।।
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती । श्री मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति ।। जय अम्बे ।।
माँ अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावै । कहत शिवानन्द स्वामी, सुख-सम्पति पावै ।। जय अम्बे ।।

1109

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

महामृत्युन्जय मंत्र

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

भावार्थ > हम भगवान शंकर की पूजा करते हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, जो प्रत्येक स्वास में जीवन शक्ति का संचार करते हैं, जो सम्पूर्ण जगत का पालन पोषण अपनी शक्ति से कर रहे हैं। उनसे हमारी प्रार्थना है कि वे हमें मृत्यु के बन्धनों से मुक्त कर दें, जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो जाएँ, जिस प्रकार एक ककड़ी बेल में पक जाने के बाद उस बेल रूपी संसार के बन्धन से मुक्त हो जाती है उसी प्रकार हम भी इस संसार रूपी बेल में पक जाने के बाद जन्म-मृत्यु के बन्धनों से सदैव के लिए मुक्त हो जाएँ और आपके चरणों की अमृतधारा का पान करते हुए शरीर को त्याग कर आप में लीन हो जाएँ।

मन्त्र लाभ >
- यह मंत्र जीवन प्रदान करता है। (अकाल मृत्यु, दुर्घटना इत्यादि)
- यह मंत्र सर्प एवं बिच्छु के काटने पर भी अपना पूरा प्रभाव रखता है।
- इस मंत्र का महत्वपूर्ण लाभ है कठिन एवं असाध्य रोगों पर विजय प्राप्त करना।
- यह मंत्र हर बीमारी को भगाने का बड़ा शस्त्र है।

1111

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

1112

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

आरती श्री रामचन्द्र जी की

श्रीरामचन्द्र रघुपुङ्गव राजवर्य राजेन्द्र राम रघुनायक राघवेश। राजाधिराज रघुन्दन रामचन्द्र दासोऽहमद्य भवतः शरणागतोऽस्मि।।

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भव भय दारुणम्। नवकंज लोचन, कंज-मुख कर-कंज पद-कंजारुणम् ॥१॥
कन्दर्प अगणित अमित छवि, नवनील-नीरद-सुन्दरम्। पटपीत मानहु तड़ित रुचि सुचि नौमी जनक सुता-वरम् ॥२॥
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव - दैत्यवंश - निकन्दनम्। रघुनंद आनंदकंद कौशलचंद्र दशरथ - नन्दनम् ॥३॥
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम्। आजानु भुजा शर-चाप-धर संग्राम-जित -खर - दूषणम ॥४॥
इति वदति तुलसीदास शंकर - शेष - मुनि - मन - रंजनम्। मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि-खल-दल-गंजनम् ॥५॥
मम कुरु मन जाहि राच्यो मिलहि सो वर सहज सुन्दर सांवरो। करुणा निधान सुजान शील स्नेह जानत रावरो ॥६॥
एहि भांति असीस सुनी सिय सहित हिय हरषित अली। तुलसी भवनिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥७॥

सोरठा- जानि गौरी अनुकूल सिय हिय हरषु न जाई कहि। मंजुल मंगल मूल वाम अंग फरकन लगे।।

1114

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

आरती श्री राम लला की

आरती कीजे श्रीराम लला की। पूण निपुण धनुवेद कला की।। धनुष बान कर सोहत नीके। शोभा कोटि मदन मद फीके।।
सुभग सिंहासन आप बिराजैं। वाम भाग वैदेही राजैं।। कर जोरे रिपुहन हनुमाना। भरत लखन सेवत बिधि नाना।।
शिव अज नारद गुन गन गावैं। निगम नेति कह पार न पावैं।। नाम प्रभाव सकल जग जानैं। शेष महेश गनेस बखानैं।।
भगत कामतरु पूरणकामा। दया क्षमा करुना गुन धामा।। सुग्रीवहुँ को कपिपति कीन्हा। राज विभीषन को प्रभु दीन्हा।।
खेल खेल महु सिंधु बधाये। लोक सकल अनुपम यश छाये।। दुर्गम गढ लंका पति मारे। सुर नर मुनि सबके भय टारे।।।
देवन थापि सुजस विस्तारे। कोटिक दीन मलीन उधारे।। कपि केवट खग निसचर केरे। करि करुना दुःख दोष निवारे।।
देत सदा दासन्ह को माना। जगत पूज भे कपि हनुमाना।। आरत दीन सदा सत्कारे। तिहुपुर होत राम जयकारे।।
कौसल्यादि सकल महतारी। दशरथ आदि भगत प्रभु झारी।। सुर नर मुनि प्रभु गुन गन गाई। आरति करत बहुत सुख पाई।।
धूप दीप चन्दन नैवेदा। मन दृढ करि नहि कवनव भेदा।। राम लला की आरती गावै। राम कृपा अमित फल पावै।।

1116

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

आरती जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे, भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करें ॥ ॐ ॥
जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिन से मन का ॥ प्रभु ॥ सुख–सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥ ॐ ॥
मात–पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी ॥ प्रभु ॥ तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ ॐ ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ॥ प्रभु ॥ पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ॐ ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ॥ प्रभु ॥ मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ ॐ ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ॥ प्रभु ॥ किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति ॥ ॐ ॥
दीन बन्धु दुःख हरता, तुम रक्षक मेरे ॥ प्रभु ॥ अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ ॐ ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥ प्रभु ॥ श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥ ॐ ॥
तन, मन, धन सब कुछ है तेरा ॥ प्रभु ॥ तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ ॐ ॥

1118

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

आरती जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे, भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करें ॥ ॐ ॥
जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिन से मन का ॥ प्रभु ॥ सुख–सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥ ॐ ॥
मात–पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी ॥ प्रभु ॥ तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ ॐ ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ॥ प्रभु ॥ पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ॐ ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ॥ प्रभु ॥ मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ ॐ ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ॥ प्रभु ॥ किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति ॥ ॐ ॥
दीन बन्धु दुःख हरता, तुम रक्षक मेरे ॥ प्रभु ॥ अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ ॐ ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥ प्रभु ॥ श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥ ॐ ॥
तन, मन, धन सब कुछ है तेरा ॥ प्रभु ॥ तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ ॐ ॥

1119

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

आरती श्री कुंज बिहारी जी की

आरती कुंजबिहारी की। श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ।। (टेक) गले में बैजंतीमाला, बजावै मुरलि मधुर बाला।
श्रवन में कुण्डल झलकाला, नंद के आनन्द नन्दलाला ।। श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ।।
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली, लतन में ठाढ़े बनमाली, भ्रमर-सी अलक,
कस्तूरी-तिलक, चन्द्र - सी झलक, ललित छवि स्यामा प्यारी की ।। श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ।।
कनकमय मोर-मुकुट बिलसै, देवता दरसन कों तरसै, गगन सों सुमन रासि बरसै, बजे मुरचंग,
मधुर मिरदंग, ग्वालिनी संग, अतुल रति गोपकुमारीकी ।। श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ।।
जहाँ ते प्रकट भई गंगा, सकल-मल-हारिणि श्रीगंगा, स्मरन ते होत मोह-भंगा, बसी सिव सीस,
जटा के बीच, हरै अघ कीच, चरन छवि श्री बनवारी की ।। श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ।।
चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही बृन्दावन बेनू, चहुँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू, हँसत मृदु मंद,
चाँदनी चंद, कटत भव-फंद, टेर सुनु दीन दुखारी की ।। श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ।।
आरती कुंजबिहारी की। श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ।। श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ।।

1121

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

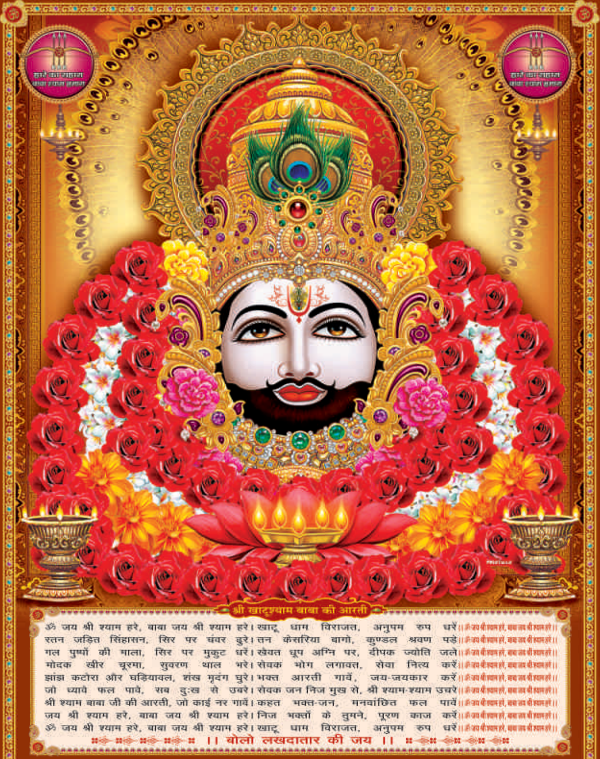

1122

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

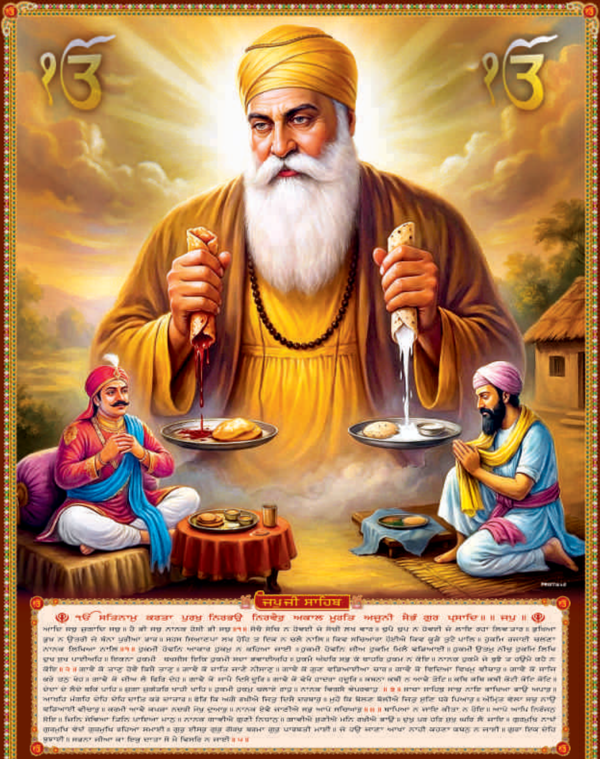

1125

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

1126

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)